नमो-नमो दुर्गे सुख करनी। नमो-नमो दुर्गे दुःख हरणी।।

शुक्रवार, 14 अगस्त, 2026 ।

वर्ष 19 । अंक 120 । पृष्ठ 4 ।

आरएनआई नंबर : RAJHIN/2007/20298

व्हाट्स एप नंबर : 85291-15101

Email : berisgnr@gmail.com

website: www.sandhyadep.world

साँध्यदीप

We Fight For Human Rights

वार्ड आरक्षण लॉटरी के बाद चरम पर होंगी राजनीतिक सरगर्मियां

श्रीगंगानगर। नगर परिषद के वार्डों में पार्षद पद के वर्ग आरक्षण को लेकर सोमवार को जिला कलक्ट्रेट में होने वाली लॉटरी के साथ ही शहर की राजनीति में हलचल तेज होने की संभावना है। महिला, अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति और अन्य पिछड़ा वर्ग के लिए आरक्षण की स्थिति स्पष्ट होने के बाद कई संभावित दावेदारों की राजनीतिक तस्वीर भी सामने आने लगेगी।

लॉटरी से पहले ही संभावित दावेदार अपने-अपने राजनीतिक समीकरणों को लेकर सक्रिय हैं। हालांकि अभी तक आरक्षण की स्थिति स्पष्ट नहीं होने के कारण कई नेता और उनके समर्थक खुलकर मैदान में नहीं उतरे हैं। आरक्षण की घोषणा के बाद ऐसे चेहरों के सामने आने की संभावना है, जो पिछले कुछ समय से राजनीतिक गतिविधियों पर नजर रखते हुए अपनी तैयारियां कर रहे हैं। नगर परिषद सभापति पद को लेकर भी राजनीतिक चर्चाएं तेज हैं। यदि आरक्षण की स्थिति संभावित दावेदारों के अनुकूल रहती है और सभापति पद सामान्य वर्ग के लिए खुला रहता है तो कई नए चेहरे अचानक राजनीतिक परिदृश्य में सक्रिय नजर आ सकते हैं।

ऐसे संभावित दावेदार अभी सीधे तौर पर अपनी दावेदारी सामने रखने से बच रहे हैं। वार्ड आरक्षण की स्थिति स्पष्ट होने के बाद वे अपने समर्थकों के साथ सक्रियता बढ़ा सकते हैं। पार्षद पद के लिए उपयुक्त वार्ड तलाशने से लेकर स्थानीय राजनीतिक समीकरणों को साधने तक की कवायद भी तेज होने की संभावना है।

आरक्षण लॉटरी के बाद शहर में राजनीतिक प्रचार का एक अलग रंग देखने को मिल सकता है। कृष्ण जन्माष्टमी और रक्षा बंधन जैसे पर्वों की शुभकामनाओं के बहाने नए राजनीतिक चेहरे बड़े-बड़े होर्डिंग्स और बधाई संदेशों के साथ शहर में 'अवतरित' हो सकते हैं। अभी तक जो चेहरे सार्वजनिक राजनीतिक गतिविधियों में कम दिखाई दे रहे हैं, वे भी लॉटरी के बाद अचानक सक्रिय नजर आ सकते हैं। शहर के प्रमुख चौराहों, बाजारों और सार्वजनिक स्थानों पर शुभकामना संदेशों वाले होर्डिंग्स के जरिए अपनी मौजूदगी दर्ज कराने की होड़ शुरू होने की संभावना है। यदि लॉटरी में संबंधित दावेदार के लिए राजनीतिक रूप से अनुकूल वार्ड सामने आता है तो उसके बाद प्रचार का दायरा और बढ़ सकता है। कुछ दावेदार खुद को संभावित पार्षद के साथ-साथ भविष्य के सभापति के चेहरे के रूप में भी पेश करने की कोशिश कर सकते हैं। हालांकि सभापति का चुनाव केवल वार्ड आरक्षण से तय नहीं होता। इसके लिए परिषद में राजनीतिक दलों की स्थिति, पार्षदों का समर्थन, पार्टी नेतृत्व के निर्णय और चुनाव बाद बनने वाले समीकरण महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इसके बावजूद वार्ड आरक्षण की लॉटरी को सभापति पद की दौड़ की शुरुआती दिशा तय करने वाला महत्वपूर्ण पड़ाव माना जा रहा है। आरक्षण की तस्वीर साफ होते ही संभावित दावेदारों के समर्थकों की सक्रियता भी बढ़ने की उम्मीद है। सोशल मीडिया पर बधाई संदेश, पोस्टर, वीडियो और स्थानीय मुद्दों से जुड़े अभियान तेज हो सकते हैं। राजनीतिक दलों के स्थानीय पदाधिकारी भी संभावित उम्मीदवारों की सक्रियता और जनाधार का आकलन शुरू कर सकते हैं। विशेष रूप से उन वार्डों पर राजनीतिक निगाहें रहेंगी, जहां आरक्षण के कारण पुराने समीकरण बदल सकते हैं। कुछ दावेदारों के लिए आरक्षण चुनौती बन सकता है, जबकि नए चेहरों के लिए यही स्थिति राजनीतिक अवसर का दरवाजा खोल सकती है। फिलहाल नगर परिषद चुनाव को लेकर कई तरह के कयास लगाए जा रहे हैं। लेकिन वार्डों के वर्ग आरक्षण की लॉटरी के बाद संभावित उम्मीदवारों की तस्वीर काफी हद तक साफ होने लगेगी। इसके साथ ही सभापति पद को लेकर चल रही अंदरूनी चर्चाएं भी खुलकर सामने आने की संभावना है। सोमवार की लॉटरी इसलिए केवल वार्डों के आरक्षण का निर्धारण नहीं करेगी, बल्कि श्रीगंगानगर नगर परिषद की आगामी राजनीति में कई नए चेहरों के प्रवेश और पुराने दावेदारों की रणनीति का रास्ता भी तय कर सकती है। इसके बाद शहर में राजनीतिक सरगर्मियां चरम पर पहुंचने के आसार हैं।

क्या कश्मीरी पंडित एक बार फिर घाटी से पलायन कर रहे हैं? कौन है यूनाइटेड लिबरेशन काउंसिल?

श्रीनगर। कश्मीर घाटी में एक बार फिर कश्मीरी पंडित कर्मचारियों की सुरक्षा को लेकर चिंता बढ़ गई है। घाटी में सरकारी नौकरी कर रहे कश्मीरी पंडित कर्मचारियों को कथित धमकी मिलने के बाद कुछ कर्मचारियों के सुरक्षित स्थानों पर चले जाने की खबरों ने 1990 के दशक की यादें ताजा कर दी हैं।

मीडिया रिपोर्टों के अनुसार, यूनाइटेड लिबरेशन काउंसिल के नाम से एक कथित धमकी-पत्र सामने आया है। इसमें घाटी में पुनर्वास योजना के तहत सरकारी नौकरी पाने वाले कश्मीरी पंडित कर्मचारियों को निशाना बनाने की धमकी दी गई है। रिपोर्टों में ऐसे कर्मचारियों की संख्या करीब 9 हजार बताई गई है। हालांकि इस पत्र की स्वतंत्र रूप से पुष्टि नहीं हुई है। रिपोर्टों के मुताबिक, धमकी सामने आने के बाद कुछ कश्मीरी पंडित कर्मचारी अपने निर्धारित आवास से निकलकर सुरक्षित स्थानों पर चले गए हैं। कुछ कर्मचारियों के घर से काम करने की व्यवस्था किए जाने की भी जानकारी सामने आई है। ऐसे घटनाक्रम ने सरकार की उस पुनर्वास नीति पर सवाल खड़े कर दिए हैं, जिसके तहत कश्मीरी पंडितों को घाटी में वापस लाने के लिए सरकारी नौकरियां और आवास उपलब्ध कराए गए थे।

कौन है यूनाइटेड लिबरेशन काउंसिल?

यूनाइटेड लिबरेशन काउंसिल का नाम हाल के दिनों में कश्मीर में सामने आए कथित आतंकी नेटवर्क के संदर्भ में चर्चा में आया है। सुरक्षा एजेंसियों से जुड़े सूत्रों के हवाले से प्रकाशित कुछ रिपोर्टों में इसे लश्कर-ए-तैयबा से जुड़े कथित फ्रंट के रूप में बताया गया है। हालांकि संगठन की वास्तविक संरचना, नेतृत्व और उसके आतंकी संगठनों से संबंधों को लेकर आधिकारिक स्तर पर पूरी तस्वीर अभी साफ नहीं है।

यही वजह है कि धमकी-पत्र की प्रामाणिकता और उसके पीछे मौजूद लोगों की पहचान की जांच सुरक्षा एजेंसियों के लिए महत्वपूर्ण हो गई है।

1990 की याद क्यों ताजा हुई?

कश्मीरी पंडितों का घाटी से बड़े पैमाने पर विस्थापन 1990 के दशक की शुरुआत में आतंकवाद और लक्षित हिंसा के दौर में हुआ था। उस समय धमकियों, हत्याओं और भय के माहौल के कारण बड़ी संख्या में कश्मीरी पंडित परिवार घाटी छोड़कर जम्मू और देश के दूसरे हिस्सों में चले गए थे।

इसके बाद केंद्र सरकार ने कश्मीरी पंडितों की घाटी में वापसी और पुनर्वास के लिए विभिन्न योजनाएं शुरू कीं। प्रधानमंत्री पुनर्वास पैकेज के तहत बड़ी संख्या में कश्मीरी पंडित युवाओं को सरकारी नौकरियां दी गईं। कई कर्मचारियों के रहने के लिए घाटी में अलग आवासीय परिसर भी बनाए गए।

लेकिन अब यदि इन्हीं कर्मचारियों को धमकियों के कारण अपने आवास छोड़ने पड़ रहे हैं तो इससे पुनर्वास प्रक्रिया की सुरक्षा व्यवस्था को लेकर सवाल उठना स्वाभाविक है।

दूरदराज के इलाकों में तैनात कर्मचारियों की अलग परेशानी

घाटी के दूरदराज और संवेदनशील इलाकों में नियुक्त कश्मीरी पंडित कर्मचारियों की स्थिति और भी चुनौतीपूर्ण रही है। कई कर्मचारियों ने सरकारी आवास उपलब्ध नहीं होने या सुरक्षा संबंधी चिंताओं के कारण होटल, सराय अथवा निकिराये के मकानों में रहने की व्यवस्था की थी।

ऐसे कर्मचारियों के लिए नौकरी के साथ-साथ सुरक्षित आवास सबसे बड़ी चिंता बनी हुई है। धमकियों की खबरों के बाद यह सवाल और गंभीर हो गया है कि क्या उन्हें ऐसे स्थानों पर तैनात किया जाना चाहिए जहां उनकी सुरक्षा को लेकर लगातार खतरा बना हुआ है।

अनुच्छेद 370 हटने के बाद शांति का दावा

केंद्र सरकार ने 5 अगस्त 2019 को जम्मू-कश्मीर से अनुच्छेद 370 के विशेष प्रावधानों को हटाने के बाद घाटी में सुरक्षा स्थिति में सुधार और आतंकवाद पर नियंत्रण को अपनी प्रमुख उपलब्धियों में गिनाया है। सरकार का दावा रहा है कि इसके बाद जम्मू-कश्मीर में हालात तेसे सामान्य हुए हैं।

लेकिन आतंकवादी घटनाओं और लक्षित हमलों की घटनाएं पूरी तरह समाप्त नहीं हुई हैं। ऐसे में कश्मीरी पंडित कर्मचारियों को मिली कथित धमकी सरकार के सामने एक बार फिर सुरक्षा और पुनर्वास दोनों से जुड़ा सवाल खड़ा करती है।

क्या फिर शुरू हो रहा है पलायन?

फिलहाल यह कहना जल्दबाजी होगी कि कश्मीरी पंडितों का 1990 जैसा सामूहिक पलायन फिर शुरू हो गया है। उपलब्ध जानकारी मुख्य रूप से कथित धमकी-पत्र और उसके बाद कुछ कर्मचारियों के सुरक्षित स्थानों पर जाने से जुड़ी है। लेकिन यदि धमकी वास्तविक साबित होती है और बड़ी संख्या में कर्मचारी घाटी छोड़ने लगते हैं तो यह सरकार की पुनर्वास नीति के लिए गंभीर झटका हो सकता है। अब निगाह सुरक्षा एजेंसियों की जांच पर है। सबसे बड़ा सवाल यही है कि यूनाइटेड लिबरेशन काउंसिल के नाम से जारी धमकी के पीछे कौन है और क्या यह किसी बड़े आतंकी नेटवर्क की नई रणनीति का हिस्सा है? इसका जवाब जांच पूरी होने के बाद ही सामने आएगा।

सादुलशहर में तिरंगा यात्रा में शामिल हुए मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा

श्रीगंगानगर/जयपुर। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा शुक्रवार को सादुलशहर में आयोजित तिरंगा यात्रा में शामिल हुए। देशभक्ति के नारों की गूंज के बीच मुख्यमंत्री ने हाथ में तिरंगा थामकर अंबेडकर सर्किल से अरूट चौक तक निकाली गई तिरंगा यात्रा में भागीदारी की। यात्रा में बड़ी संख्या में आमजन शामिल हुए।

इससे पहले जनसभा को संबोधित करते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि तिरंगा यात्राओं में नागरिकों का जोश और जुनून इस बात का प्रमाण है कि तिरंगा प्रत्येक भारतीय के दिल में बसता है। तिरंगा हमारे गौरव, राष्ट्रीय चेतना और विरासत की पहचान है, जो हमें स्वतंत्रता संग्राम और उससे जुड़े इतिहास की याद दिलाता है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि 'हर घर तिरंगा अभियान' के तहत आयोजित की जा रही तिरंगा यात्राओं से नई पीढ़ी में राष्ट्रभक्ति की भावना मजबूत हो रही है। साथ ही राष्ट्र सेवा

और राष्ट्र प्रथम के संकल्प को भी मजबूती मिल रही है। उन्होंने कहा कि तिरंगे के साथ राजस्थान का भी गहरा संबंध है। आजाद भारत में फहराया गया पहला तिरंगा राजस्थान में तैयार हुआ था। दौसा के आलूदा गांव के बुनकरों ने तिरंगे के लिए खादी का कपड़ा बुना था और गोविंदगढ़ में इसे रंगकर तिरंगे का रूप दिया गया था। मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा आजादी का 'अमृत महोत्सव' के अवसर पर वर्ष 2022 में शुरू किया गया 'हर घर तिरंगा अभियान' अब जनआंदोलन का रूप ले चुका है। इस वर्ष का अभियान राष्ट्रगीत 'वंदे मातरम्' के 150 वर्ष पूरे होने की भावना को समर्पित है। उन्होंने कहा कि 14 अगस्त को विभाजन विभीषिका दिवस के रूप में भी याद किया जाता है। देश के विभाजन की त्रासदी से लाखों लोग प्रभावित हुए थे। इस घटना ने सीमावर्ती क्षेत्रों के लोगों के जीवन को भी हमेशा के लिए बदल दिया। जनसभा के दौरान मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने सादुलशहर क्षेत्र के चूनावढ़ में मिल्क चिलिंग प्लांट स्थापित करने की घोषणा की। इससे क्षेत्र के दुग्ध उत्पादकों को दूध के संग्रहण और संरक्षण की बेहतर सुविधा मिलने की उम्मीद है। तिरंगा यात्रा में शामिल होने से पहले मुख्यमंत्री ने सादुलशहर में राजकीय उप जिला चिकित्सालय के नवीन भवन का शिलान्यास किया। नवीन भवन के निर्माण से क्षेत्र के लोगों को बेहतर चिकित्सा सुविधाएं उपलब्ध कराने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम माना जा रहा है।

कार्यक्रम में केन्द्रीय विधि एवं न्याय राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) अर्जुन राम मेघवाल, विधायक गुरवीर सिंह सहित स्थानीय जनप्रतिनिधि और बड़ी संख्या में आमजन मौजूद रहे।

चुनाव आयोग ने सैकड़ों करोड़ रुपये में हमारी पार्टी और चुनाव चिन्ह बेच दिया : राउत

मुंबई। शिवसेना (यूबीटी) के सांसद संजय राउत ने केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह और निर्वाचन आयोग पर आरोप लगाया है कि उनकी पार्टी के वैध नाम और आधिकारिक चुनाव चिह्न को छीनने के लिए सैकड़ों करोड़ रुपये का सौदा किया गया।

मीडिया से बात करते हुए श्री राउत ने महाराष्ट्र के राजनीतिक घटनाक्रम पर बेबाक राय रखी और दावा किया कि राज्य में एक अयोग्य व्यक्ति को अवैध तरीके से मुख्यमंत्री पद पर बैठाया गया। उन्होंने आरोप लगाया कि चुनाव आयोग ने निष्पक्ष प्रक्रियाओं को पूरी तरह दरकिनार कर दिया और अपना फैसला सुनाने से पहले उनकी पार्टी का पक्ष सुनने से मना कर दिया।श्री राउत ने दावा किया कि चुनाव आयोग ने एक मोहरे की तरह काम किया। उन्होंने आरोप लगाया कि पर्दे के पीछे तालमेल के जरिए सैकड़ों करोड़ रुपये में पार्टी का नाम और उसका ऐतिहासिक धनुष-बाण चुनाव चिह्न बेच दिया गया। राजनीतिक विभाजन का मुख्य सूत्रधार सीधे तौर पर गृह मंत्री शाह को ठहराते हुए श्री राउत ने दावा किया कि गृह मंत्री अब जवाबदेही से बचने के लिए भाग रहे हैं।श्री राउत ने विदेश नीति को लेकर अपनी टिप्पणी में कहा कि केवल लोगों को गले लगाना विदेश नीति नहीं कहलाता, बल्कि विदेश नीति का वास्तविक उद्देश्य दुनिया भर में देश का मान बढ़ाना होना चाहिए।प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और श्री शाह से सवाल पूछते हुए श्री राउत ने कहा कि क्या परिसीमन विधेयक पारित कराने के लिए राजनीतिक दलों को तोड़ना और उनमें फूट डालना संवैधानिक है? इसके साथ ही उन्होंने देश भर में बढ़ती बेरोजगारी और महंगाई का मुद्दा भी उठाया।

हरियाणा बिल्डिंग कोड में बड़ा बदलाव

पंचकूला। हरियाणा सरकार ने राज्य बिल्डिंग कोड-2017 में महत्वपूर्ण संशोधन करते हुए एक भूखंड पर अधिकतम चार आवासीय इकाइयों की अनुमति का प्रावधान किया है। हालांकि एक मंजिल पर केवल एक ही आवासीय इकाई की अनुमति होगी। निर्माण संबंधित सेक्टर या स्थल के जोनिंग प्लान अथवा आर्किटेक्चरल कंट्रोल शीट में निर्धारित पाबंदियों के अधीन रहेगा। नगर एवं ग्राम आयोजना विभाग ने 13 अगस्त, 2026 को बिल्डिंग कोड की धारा 13.2 के तहत यह संशोधन जारी किया। संशोधित प्रावधान के मुताबिक भवन को संबंधित सेक्टर या स्थल के लिए निर्धारित जोनिंग प्लान या आर्किटेक्चरल कंट्रोल शीट में दर्ज प्रतिबंधों का पालन करना अनिवार्य होगा। इसके साथ ही स्पष्ट किया गया है कि एक मंजिल पर केवल एक आवासीय इकाई और पूरे भूखंड पर अधिकतम चार आवासीय इकाइयां ही अनुमत होंगी।

अरुणाचल में चीन द्वारा पेट्रोलिंग रोकने का दावा चिंताजनक: राहुल गांधी

नयी दिल्ली। लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी ने दावा किया कि चीन ने अरुणाचल प्रदेश के कुछ सीमावर्ती इलाकों में भारतीय सेना को गश्त (पेट्रोलिंग) करने से रोक दिया है। उन्होंने इस स्थिति को बेहद चिंताजनक करार देते हुए केंद्र सरकार और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की चुप्पी पर गंभीर सवाल उठाए हैं।

सोशल मीडिया पोस्ट के जरिए श्री गांधी ने दावा किया कि अरुणाचल प्रदेश में कई जगहों पर चीन ने भारतीय सेना को पेट्रोलिंग करने से रोक दिया है। उन्होंने इसे बेहद चिंताजनक स्थिति बताया। कांग्रेस नेता ने कहा कि इससे भी अधिक चिंताजनक बात प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी, रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह और केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने इस मामले पर चुप्पी साधी हुई है। उन्होंने आरोप लगाया कि मोदी सरकार चीन को रोकने के बजाय इस खबर को रोकने के लिए मीडिया पर दबाव बना रही है।

नेता प्रतिपक्ष ने गलवान घाटी की घटना के बाद प्रधानमंत्री मोदी के उस बयान का भी उल्लेख किया, जिसमें उन्होंने कहा था कि चीन ने भारत की जमीन का एक इंच भी नहीं लिया। श्री गांधी ने आरोप लगाया कि उस बयान से देश को भारी नुकसान हुआ था। उन्होंने कहा कि आज भी प्रधानमंत्री की छवि बचाने का वही 'ऑपरेशन' जारी है।

संपादकीय

समुद्र की पारिस्थितिकी पर मंडराया बड़ा संकट

अमेरिका और ईरान के बीच युद्ध समाप्त करने को लेकर अंतरिम समझौता होने के बावजूद शांति वार्ता आगे नहीं बढ़ पा रही है। एक बार संघर्ष विराम पर सहमति बनने के बाद भी दोनों देशों की ओर से वार-पलटवार का सिलसिला जारी है। पश्चिम एशिया में जारी संघर्ष का असर अब केवल तेल, गैस और अन्य वस्तुओं की आपूर्ति प्रभावित होने तक सीमित नहीं रह गया है, बल्कि इससे समुद्र की पारिस्थितिकी पर भी खतरा मंडराने लगा है। होर्मुज जलमार्ग की नाकेबंदी से दुनिया पर आर्थिक असर को लेकर तो आकलन लगातार किया जा रहा है, लेकिन इस क्षेत्र में लंबे समय तक जहाजों की आवाजाही बंद रहने से पैदा होने वाले संभावित पारिस्थितिकी नुकसान पर अब तक कम ही ध्यान दिया गया है। हाल में किए गए एक अध्ययन के मुताबिक, बीती फरवरी से फारस की खाड़ी में खड़े डेढ़ हजार से अधिक वाणिज्यिक जहाज गंभीर पर्यावरणीय खतरा पैदा कर सकते हैं। इन जहाजों के स्थिर रहने से इनके बाहरी हिस्सों पर समुद्री जीवों और वनस्पतियों की परत जमा हो सकती है। जब ये जहाज अलग-अलग बंदरगाहों की ओर रवाना होंगे, तो इनके साथ समुद्री जीव नए क्षेत्रों में पहुंच सकते हैं, जिससे जैव-सुरक्षा के लिहाज से नया खतरा पैदा होने की आशंका है। यह अफसोसनाक है कि इस दोहरे खतरे से बेफिक्र होकर अमेरिका और ईरान अपनी-अपनी जिद पर अड़े हैं। गौरतलब है कि अमेरिका और ईरान के बीच युद्ध समाप्त करने को लेकर अंतरिम समझौता होने के बावजूद शांति वार्ता आगे नहीं बढ़ पा रही है। एक बार संघर्ष विराम पर सहमति बनने के बाद भी दोनों देशों की ओर से वार-पलटवार का सिलसिला जारी है। इसी का नतीजा है कि ईरान ने होर्मुज

जलमार्ग को फिर से बंद कर दिया है और इसके जवाब में अमेरिका ने दोबारा पूरे क्षेत्र की नाकेबंदी कर दी है। ईरान ने बीते सोमवार को दो टूक कहा कि जब तक अमेरिका उनकी शर्तों को स्वीकार नहीं करेगा, तब तक वह होर्मुज जलमार्ग को फिर से नहीं खोलेगा। दरअसल, ईरान चाहता है कि अमेरिका नाकेबंदी हटाए, युद्ध से हुए नुकसान के लिए मुआवजा दे, आर्थिक प्रतिबंध खत्म करे और उसकी जब्त संपत्तियों को मुक्त करे। ईरान की इन शर्तों को लेकर अमेरिका कितना गंभीर है, इसका अंदाजा राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के उस बयान से लगाया जा सकता है, जिसमें उन्होंने कहा कि तेहरान के वार्ताकारों ने अब तक ऐसी कोई मांग नहीं उठाई है। इसे विडंबना ही कहा जाएगा कि दोनों देशों के बीच तनाव और संघर्ष का सबसे ज्यादा असर भारत समेत उन देशों को झेलना पड़ रहा है, जिनका सीधे तौर पर इससे कोई संबंध नहीं है। हालांकि पश्चिम एशिया में फिर से शांति कायम करने की जिम्मेदारी दोनों देशों की है, लेकिन युद्ध की शुरुआत चूंकि अमेरिका और इजराइल ने मिलकर की थी, इसलिए समाधान के रास्ते तलाशने का दायित्व भी उन पर ज्यादा है। सवाल अब वैश्विक आपूर्ति शृंखला के बाधित होने से उपजे संकट का ही नहीं है, बल्कि समुद्र के पर्यावरण का भी है। लंबे समय तक जहाजों के एक ही स्थान पर स्थिर रहने और उसके बाद विभिन्न बंदरगाहों की ओर रवाना होने से उनके साथ समुद्री जीव, पौधे, परजीवी और अन्य रोगजनक सूक्ष्म जीव भी नए क्षेत्रों में पहुंच जाएंगे, जिससे स्थानीय पारिस्थितिकी तंत्र, मत्स्य संसाधन, जलीय कृषि और तटीय उद्योग को भी नुकसान हो सकता है। यही नहीं, अगर तेल से भरे जहाजों पर बड़े हमले होते हैं, तो समुद्र में तेल फैलने से बड़े पैमाने पर जलीय जीवों को नुकसान होगा। ऐसे में जरूरी है कि अमेरिका और ईरान मानवीय तथा पर्यावरणीय संकट की गंभीरता को ध्यान में रखकर शांति वार्ता को सफल बनाने की दिशा में सकारात्मक सोच के साथ कदम आगे बढ़ाएं।

मामूली रकम के लिए भी जा रही जान

शहरों में बढ़ते अपराध के कारणों में आर्थिक पहलू भी शामिल है। बेरोजगारी और महंगाई ने आम लोगों की चुनौतियां बढ़ा दी हैं। यही वजह है कि कुछ लोग चंद रुपये की खातिर किसी की जान लेने पर उतारू हो जाते हैं। राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में हिंसक वारदातों का दायरा लगातार बढ़ता जा रहा है। सरकार के तमाम दावों के बावजूद अपराधियों में कानून का कोई खौफ नजर नहीं आता है। यहां तक कि मामूली विवाद में किसी की जान लेना सामान्य बात हो गई है। हाल में यहां के बेगमपुर इलाके में ऐसी ही घटना सामने आई, जहां महज सात सौ रुपये नहीं लौटाने को लेकर हुए विवाद में एक व्यक्ति की हत्या कर दी गई। सवाल है कि सुरक्षा की लिहाज से संवेदनशील मानी जाने वाली देश की राजधानी में अपराध की इस स्थिति के लिए कौन जिम्मेदार है? चिंता का विषय यह भी है कि लोग छोटी-सी बात पर इस कदर हिंसक हो उठते हैं कि किसी को जान से मार देने में भी उनके हाथ नहीं कांपते हैं। पुलिस ने इस मामले में तीन आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया है, लेकिन अहम सवाल यह है कि उधार की छोटी-सी रकम क्या किसी की जान की कीमत से बढ़कर है? महज कुछ रुपये के लिए किसी की हत्या कर देना कानून व्यवस्था की विफलता तो है ही, मगर इसके समाजशास्त्रीय पक्ष को भी नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। गंभीर चिंता की बात यह है कि आपराधिक घटना के दौरान वहां मौजूद लोग बीच-बचाव के लिए आगे आने के बजाय तमाशबीन बने रहते हैं। यह आत्मकेंद्रित हो रहे समाज की स्याह तस्वीर को उजागर करता है। इससे पता चलता है कि लोग नैतिक और मानवीय मूल्यों से दूर होते जा रहे हैं। शहरों में बढ़ते अपराध के कारणों में आर्थिक पहलू भी शामिल है। बेरोजगारी और महंगाई ने आम लोगों की चुनौतियां बढ़ा दी हैं। यही वजह है कि कुछ लोग चंद रुपये की खातिर किसी की जान लेने पर उतारू हो जाते हैं। कुछ समय पहले दिल्ली के तिलकनगर में मात्र डेढ़ सौ रुपये के लेन-देन के विवाद में एक युवक की हत्या कर दी गई थी।

आज का कार्टून

भूख की अदालत में कौन कटघरे में, मां, समाज या व्यवस्था?

आलोक यात्री

आधी सदी पहले दुष्यंत कुमार ने एक शेर कहा था, 'भूख है तो सब्र कर रोटी नहीं तो क्या हुआ, आजकल दिल्ली में है जेर-ए-बहस ये मुद्दआ।' एक अदालती फैसला सामने आने के बाद यह बात शिद्दत से महसूस हो रही है कि आधी सदी बाद भी यह शेर और परिस्थितियां अपनी जगह जस की तस खड़ी हैं। गुजरात उच्च न्यायालय ने अपने एक फैसले में साहित्यकारों और विचारकों को भी उद्धृत किया।

मामला दो साल की एक बच्ची की हत्या से जुड़ा है। रोटी मांगने पर मां ने बच्ची की कथित रूप से पीट-पीट कर हत्या कर दी थी। चार महीने बाद आरोपी मां को अदालत ने जमानत दे दी। इस मामले में एक हत्यारोपी को जमानत मिलना महत्त्वपूर्ण है, लेकिन इससे भी अहम है गुजरात उच्च न्यायालय के न्यायाधीश की टिप्पणी।

अपने फैसले में किसी न्यायाधीश को पहली बार विश्व विख्यात लेखकों को उद्धृत करते हुए देखना समाज की ओर एक नई खिड़की खुलने जैसा सुखद अहसास है। उच्च न्यायालय की पीठ ने इस प्रकरण को दिल दहला देने वाली घटना बताते हुए कहा कि भूख केवल आर्थिक मुद्दा नहीं है बल्कि मानवीय गरिमा, न्याय और जमीर का मामला है। अदालत ने इसे समाज और व्यवस्था की सामूहिक विफलता करार देते हुए कहा कि भूख जब एक मां को ऐसा कदम उठाने पर मजबूर करे, तो यह केवल अपराध नहीं, बल्कि मानवीय गरिमा और सामाजिक न्याय का गंभीर विषय है।

आरोपी मां ने बेटी द्वारा बार-बार खाना मांगने पर उसकी बेरहमी से पिटाई कर दी

अत्यधिक गरीबी के प्रभाव को समझने के लिए अदालत ने अपने फैसले में विश्व विख्यात लेखकों पन्नालाल पटेल, चार्ल्स डिकेंस, विक्टर ह्यूगो और महात्मा गांधी के विचारों तथा तर्कों का हवाला दिया। अभियोजन पक्ष के अनुसार आरोपी मां ने मार्च 2026 में बेटी द्वारा बार-बार खाना मांगने पर उसकी बेरहमी से पिटाई कर दी थी। बचाव पक्ष का कहना था कि तीन बच्चों की मां जिसे उसका पति छोड़ चुका था, अत्यधिक गरीबी, भुखमरी और सात महीने की गर्भावस्था से जूझ रही थी।

आरोपी मां की जमानत अर्जी मंजूर करते हुए अपने फैसले में अदालत में दो विश्वविख्यात उपन्यासों, पन्नालाल पटेल के गुजराती उपन्यास 'मानवीनी भवाई' और विक्टर ह्यूगो के उपन्यास 'लेस मिजरेबल्स' का हवाला दिया गया। न्यायमूर्ति हसमुख डी सुथार की पीठ ने अपने फैसले में कहा कि भुखमरी जब किसी मां को इतना बड़ा कदम उठाने पर मजबूर कर देती है तो यह विफलता किसी एक व्यक्ति की नहीं बल्कि पूरे समाज की होती है। इस दुखद घटना को करुणा और इस बात के पुख्ता संकल्प के तौर पर देखा जाना चाहिए कि कोई भी मां या बच्चा भुखमरी की पीड़ा सहने को मजबूर न हो।

उन्नीसवीं सदी के फ्रांस और ब्रिटेन में भूख, गरीबी का वर्णन

फैसले में उद्धृत उपन्यासों में से एक में पन्नालाल पटेल ने भीषण भूख और सामाजिक व्यवस्था के ढहने से पैदा होने वाले मनोवैज्ञानिक डर को रेखांकित किया है। जबकि विक्टर ह्यूगो ने उन्नीसवीं सदी के फ्रांस में गरीब, दबे-कुचले और समाज के हाशिये पर धकेल दिए गए लोगों की जिंदगी और संघर्ष को दर्शाया है। चार्ल्स डिकेंस ने भी उन्नीसवीं सदी के औद्योगिक ब्रिटेन में भूख, गरीबी और सामाजिक न्याय को बहुत करीब से देखा और अपनी रचनाओं में उसे गहराई से उभारा है।

चार्ल्स का यह कथन खास ध्यान देने योग्य है 'चमचमाते और खुशहाल लंदन के नीचे एक अंधेरा, भूखा और रोता हुआ लंदन भी बसता है।' एक जगह वे लिखते हैं- 'भूख उन दीवारों को भी तोड़ देती है जिन्हें कानून नहीं लांघ सकता।' अपने फैसले में अदालत ने महात्मा गांधी और ब्रितानी लेखक चार्ल्स डिकेंस के कथनों के अलावा हिंदू, मुसलिम और ईसाई धर्म ग्रंथों का भी उल्लेख किया जिसमें भूखे को खाना खिलाने को एक पवित्र कर्तव्य बताया गया है। इस क्रम में महात्मा गांधी के इस उदाहरण को इंगित किया गया कि दुनिया में ऐसे लोग भी हैं, जो इतने भूखे हैं कि उन्हें भगवान रोटी के रूप में ही दिखाई दे सकते हैं।

किसी व्यक्ति को भूख से मरने देना सामाजिक विफलता

सभी धर्म यह बताते हैं कि किसी व्यक्ति को भूख से मरने देना न केवल एक सामाजिक विफलता है बल्कि एक नैतिक और आध्यात्मिक विफलता भी है। यह घटना दिल दहला देने वाली होने के साथ-साथ यह भी याद दिलाती है कि भूख महज आर्थिक समस्या नहीं है बल्कि मानवीय गरिमा, न्याय और अंतरात्मा का मामला है। साथ ही यह घटना केवल एक व्यक्ति की त्रासदी नहीं है बल्कि समाज पर एक गंभीर आरोप है और यह सामाजिक न्याय एवं नैतिकता से जुड़े बुनियादी सवाल खड़े करती है।

फैसले में पीठ ने टिप्पणी की कि 'इस अदालत का मानना है कि सामाजिक न्याय इस सिद्धांत पर आधारित है कि हर इंसान को भोजन, रहने की जगह, स्वास्थ्य सेवा और सम्मान जैसी बुनियादी जरूरतें मिलनी चाहिए। भुखमरी के कारण जब कोई मां इतना कठोर कदम उठाने पर मजबूर हो जाती है तो यह किसी एक व्यक्ति की नहीं बल्कि पूरे समाज की विफलता होती है।'

सामाजिक कल्याण व्यवस्था की विफलता

अदालत ने यह भी कहा कि यह घटना सामाजिक कल्याण व्यवस्था की विफलता को भी दर्शाती है और कमजोर परिवारों, विशेषकर महिलाओं और बच्चों की सुरक्षा के लिए राज्य और समाज की नैतिक जिम्मेदारी को उजागर करती है। भारतीय संविधान के तहत बच्चों को छह साल की आयु पूरी होने तक शुरुआती बचपन की देखभाल और शिक्षा के लिए मौलिक अधिकार दिए गए हैं और सार्वजनिक स्वास्थ्य को बेहतर बनाने के लिए पोषण के स्तर और जीवन स्तर को ऊपर उठाना राज्य सरकार का कर्तव्य है।

शायद यह पहला अवसर है जब अदालत ने लेखकों को उद्धृत किया है। अब देखना यह है कि नैतिकता और जुर्म के दो पलड़ों पर टिके इस प्रकरण का परिणाम संविधान की किताब से निर्धारित होगा या शासकीय विफलता भी इस हत्या की दोषी मानी जाएगी।

कुछ समय पहले राजस्थान के नागौर जिले के सुरियास गांव में पहली बार एक बेटी का 'पाग दस्तूर' किया गया। राजस्थान की पारंपरिक सामाजिक व्यवस्था में पिता के निधन के बाद परिवार के बड़े बेटे को परिवार का उत्तराधिकारी घोषित किया जाता है। इसी को 'पाग दस्तूर' कहते हैं। अगर परिवार में पुत्र नहीं होता, तो कई परिवार दत्तक पुत्र लेकर यह रस्म निभाते हैं।

मनोरमा नदी के किनारे आज खेत लहलहाते हैं। पगडंडियां हैं, पेड़ हैं और एक गहरी खामोशी है। इसी मिट्टी के नीचे 169 साल पुरानी एक ऐसी कहानी दफन है। इसकी आंच आज भी महसूस की जा सकती है। इस आंच का नाम है महुआ डाबर। वह गांव जो आजादी की जंग लड़ने के गुनाह में पूरी तरह जमींदोज कर दिया गया। ब्रिटिश अभिलेखों में इसे बाद में गैरचिरागी घोषित कर दिया गया। मगर, उसकी हुंकार यहां की हवाओं से आज भी सुनाई देती है। बस, सत्ता के बहरे कान इसे कभी सुन नहीं सके।

महुआ डाबरः 1857 की वह गुमनाम कहानी

डॉ. शाह आलम राना

बस्ती जिला मुख्यालय से महज 16 किलोमीटर दक्षिण और बहादुरपुर ब्लॉक से करीब दो किलोमीटर दूर स्थित यह गांव कभी एक समृद्ध कस्बा था। 1813 में डॉ. फ्रांसिस बुकानन के सर्वेक्षण में यहां करीब 200 घरों का उल्लेख मिलता है। कई घर दो मंजिला थे। मनोरमा नदी के किनारे बसे इस कस्बे में व्यापार, कारीगरी और शिक्षित लोगों की अच्छी मौजूदगी थी। बाद में मुर्शिदाबाद से आए रेशम और कपड़ा बुनने वाले कारीगरों ने इसकी समृद्धि को और बढ़ाया। फिर आया 1857। और महुआ डाबर इतिहास के सबसे भयावह अध्यायों में दर्ज हो गया। दस जून 1857 को यहां क्रांति की आग भड़की। विद्रोह के दौरान फैजाबाद से भाग रहे कुछ ब्रिटिश अधिकारियों का सामना महुआ डाबर में विद्रोहियों से हुआ। ब्रिटिश अभिलेखों में लेफ्टिनेंट टीई. लिंडसे, डब्ल्यूएच. थॉमस, जीएल. कॉटली, सार्जेंट एडवर्ड्स, एएफ. इंग्लिश और टीजे. रिची समेत कई अधिकारियों की हत्या का उल्लेख मिलता है।

इसके बाद अंग्रेजी प्रशासन ने महुआ डाबर को निशाना बनाया। महुआ डाबर को जलाकर पूरी तरह नष्ट कर दिया गया। तत्कालीन कमिश्नर डब्ल्यू. विनयार्ड और डिप्टी कलेक्टर विलियम पेप्पे के बीच पत्राचार में इसके सुबूत मिलते हैं। 15 जून 1857 के पत्र में पेप्पे को लिखे पत्र में विनयार्ड ने गांव को पूरी तरह जलाकर नष्ट करने और यहां तक कि एक भी ईंट साबुत न बचने का निर्देश दिया था। चार जुलाई के पत्र में विनयार्ड ने तीन जुलाई को गांव जलाए जाने की कार्रवाई पर संतोष व्यक्त किया। साथ ही, सभी घरों को जमींदोज करने का काम पूरा करने के निर्देश दिए।

इससे साफ है कि महुआ डाबर का विनाश कोई अचानक हुई घटना नहीं था। स्थानीय स्मृतियों और संग्रहालय में संरक्षित सामग्री के अनुसार, इस कार्रवाई में 5000 से अधिक लोगों के मारे जाने का दावा किया जाता है। हालांकि, इस संख्या की स्वतंत्र अभिलेखीय पुष्टि के लिए व्यापक शोध की जरूरत है। गांव के मिट जाने का प्रमाण ब्रिटिश दस्तावेजों में भी मिलता है। बाद के अभिलेखों में महुआ डाबर को 'गैरचिरागी' यानी अस्तित्वहीन दर्ज किया गया।

पेप्पे की कब्र बची, महुआ डाबर की स्मृति नहीं : विलियम पेप्पे ने यूनिवर्सिटी ऑफ एबरडीन से सिविल इंजीनियरिंग की पढ़ाई की थी। लेकिन 1857 में वह ब्रिटिश प्रशासन के दमन अभियान का हिस्सा बने। 1911 में इलाहाबाद के गवर्नमेंट प्रेस से प्रकाशित सर एडवर्ड आर्थर हेनरी ब्लंट की पुस्तक में पेप्पे की कब्र पर अंकित शिलालेख का उल्लेख मिलता है। उसमें 1857 के दौरान उनकी सेवाओं और महुआ डाबर को जलाने की कार्रवाई का भी जिक्र है। आज स्कॉटलैंड के एबरडीन में पेप्पे की कब्र संरक्षित है। विडंबना यह है कि जिस व्यक्ति की कब्र पर महुआ डाबर जलाने का उल्लेख सुरक्षित है, उसी महुआ डाबर के मृतकों की स्मृति आज भी सरकारी संरक्षण की बाट जोह रही है।

कहानियों से दस्तावेजों तक : महुआ डाबर की कहानी पीढ़ियों की स्मृतियों में बची रही। खेतों से निकलने वाले जले हुए अवशेष, पुराने किस्से और बिखरे दस्तावेज इस इतिहास की गवाही देते रहे। 1997 में महुआ डाबर आना-जाना शुरू हुआ तो इस इतिहास को समझने की कोशिश शुरू हुई। खोजबीन में 1836 की रॉबर्ट मोंटगोमेरी मार्टिन की पुस्तक, डॉ. फ्रांसिस बुकानन का सर्वेक्षण, ब्रिटिश अधिकारियों का पत्राचार और 1857 के प्रत्यक्षदर्शी विवरण सामने आए। सार्जेंट बुशर के बयान में महुआ डाबर में ब्रिटिश अधिकारियों पर हुए हमले और उसके बाद की घटनाओं का विवरण मिलता है। दूसरी ओर ब्रिटिश प्रशासन का पत्राचार गांव को पूरी तरह नष्ट करने की योजना का प्रमाण देता है। यानी महुआ डाबर का इतिहास केवल लोककथा नहीं है। इसके कई महत्वपूर्ण हिस्से औपनिवेशिक दस्तावेजों में भी दर्ज हैं।

राख से उठता संग्रहालय: इसी इतिहास को बचाने की कोशिश में पूरा पिरई गांव में महुआ डाबर से जुड़ी सामग्री जुटाई गई। वर्ष 1999 में महुआ डाबर संग्रहालय की विधिवत स्थापना हुई। आज यहां ऐतिहासिक दस्तावेज, पांडुलिपियां, पत्र, मुकदमों की कार्यवाहियां, पुस्तकें, समाचार पत्र, औजार, हथियार, सिक्के, डाक टिकट, तस्वीरें, पेंटिंग्स और महुआ डाबर से मिले अवशेष संरक्षित हैं। संग्रहालय का रिपॉजिटरी सेक्शन पूरा पिरई में और प्रदर्शनी केंद्र शहीद स्थल महुआ डाबर में है। ढाई दशक के इस प्रयास की सबसे बड़ी विडंबना यह है कि संग्रहालय आज भी किराए के भवन में संचालित हो रहा है और सरकारी संरक्षण तथा नियमित अनुदान की प्रतीक्षा कर रहा है।

इतिहास का सवाल अब सरकार से : महुआ डाबर से जुड़े लोगों का सवाल है कि जब जलियांवाला बाग राष्ट्रीय स्मृति का प्रतीक बन सकता है तो 1857 के इस महत्वपूर्ण स्थल को उसका उचित स्थान क्यों नहीं मिल सकता? स्थानीय स्तर पर उपलब्ध जानकारी के अनुसार, अब तक राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, राज्यपाल, मुख्यमंत्री, जिलाधिकारी या जिला पर्यटन अधिकारी का यहां औपचारिक दौरा नहीं हुआ। सरकारी अनुदान भी नहीं मिला। पाठ्य पुस्तकों में भी महुआ डाबर का विस्तृत इतिहास नहीं है। तीन जुलाई 2011 को तत्कालीन सांसद जगदम्बिका पाल ने यहां श्रद्धांजलि देकर स्मृति पट्टिका का अनावरण जरूर किया था।

सही ड्रेस व कपड़ों का चयन करें तो छोटी हाइट को भी लंबा दिखा सकते हैं

कई लोग अपनी हाइट से नाखुश रहते है, उन्हें लगता हैं कि वे थोड़े और लंबे होते तो अच्छा होता। लेकिन अगर कम व अवरेज हाइट होने पर भी सही ड्रस व कपड़ों का चयन करें तो छोटी हाइट को भी लंबा दिखा सकते हैं। आइए, हम आपको कपड़ों के चयन से जुड़ी कुछ ऐसी बातें बताते हैं जो छोटी हाइट को लंबा दिखाने में कारगर साबित होंगी -

- ऐसी ड्रेस पहनें जिसमें पैर दिखें तो आप लंबी नजर आएंगी जैसे ऐसी कोई शॉर्ट ड्रेस, जो घुटने तक या उससे ऊपर हो। इस तरह की ड्रेस पहनकर छोटे कद को लंबा दिखाया जा सकता है।
- अगर आपका कद छोटा है तो आप हाई वेस्ट की जींस पहन सकती हैं। इस जींस में आपके पैर लंबे नजर आएंगे जिससे देखने वालों को आपकी लंबाई अधिक होने का एहसास होगा।
- छोटे कद को लंबा दिखाने के लिए ऐसे कपड़ों का चयन करें जो वी नेक के हो, जैसे वी-नेक वाली शर्ट, टी-शर्ट, कुर्ती व ड्रेस आदि। गोल गले के कपड़े पहनने से आपको बचना चाहिए।
- कद को लंबा दिखाने के लिए सर से पैर तक एक ही रंग के कपड़ें पहनें, जैसे टॉप और बॉटम दोनों का एक ही रंग होने पर आपका कद लंबा नजर आएगा। वैसे छोटे कद पर गहरे रंग के कपड़ें भी देखने वालों को लंबा होने का एहसास देते है।
- गाउन पहनकर भी आप लंबी नजर आ सकती हैं।
- कपड़ों के अलावा हाई हील्स पहनकर भी आप हाइट को बढ़ा हुआ दिखा सकती हैं।

शॉपिंग लिस्ट में शामिल करें को-ऑर्ड्स

कम्फर्टेबल आउटफिट्स खरीदना चाहती हैं तो को-ऑर्ड्स ट्राई करें। ये आउटफिट फिट होने के साथ बेहद स्टाइलिश भी है। इसको पहनने के कई फायदे हैं। इन्हें पहनने में झंझट नहीं होता, मौसम के हिसाब से कम्फर्टेबल है वहीं स्टाइल के मामले में भी नंबर वन। इन टू-पीस सेट्स के साथ आपको ज्यादा अक्सेसरीज भी कैरी करने की जरूरत नहीं। अगर आप अभी भी इस फैशन को ट्राई करने में झिझक रहे हैं तो बॉलिवुड सिलेब्स से आइडिया ले सकते हैं।

सावन में मेहंदी और चूड़ियों के बिना क्यों नहीं होता पूरा श्रृंगार?

सावन में मेहंदी और हरा रंग अपनाना सिर्फ एक परंपरा नहीं है, बल्कि यह धर्म और साइंस दोनों के अनुसार सेहत और खुशहाली लाता है। सावन सिर्फ पूजा-पाठ का महीना नहीं है, बल्कि यह मौसम खुद को कुदरत से जोड़ने और जीवन में पॉजिटिव एनर्जी लाने का एक खास मौका भी है। इस मौसम में चारों तरफ हरियाली बिखरी होती है। अधिकतर महिलाएं इस पावन महीने में श्रृंगार करती हैं। क्या आप जानती हैं कि हाथों में रची मेहंदी और हरे रंग की चूड़ी पहनना सिर्फ हमारी परंपरा ही नहीं है, बल्कि इसके पीछे कई धार्मिक, ज्योतिषीय और साइंटिफिक कारण भी छिपे हैं। सावन के दौरान हरा रंग और मेहंदी अपनाना अच्छी सेहत, खुशहाली और सुहाग के लिए बेहद शुभ माना जाता है।

सावन में मेहंदी लगाने और चूड़ियां पहनने के धार्मिक कारण

सावन महीने में भगवान शिव के साथ-साथ माता पार्वती की भी पूजा की जाती है। मंगला गौरी व्रत और हरियाली तीज जैसे मौकों पर मेहंदी लगाना और हरे कपड़े पहनना पति की लंबी उम्र और शादीशुदा जिंदगी में मिठास के लिए बहुत अच्छा माना जाता है। हमारी परंपराओं में महिलाओं को कुदरत का ही एक रूप माना गया है। ऐसे में जब महिलाएं हरे रंग का श्रृंगार करती हैं, तो इससे भगवान शिव, माता पार्वती, विष्णु जी और शनिदेव का आशीर्वाद मिलता है। यह रंग मन में शांति और प्यार भरता है।

सेहत और आयुर्वेद से जुड़ा वैज्ञानिक कारण

सावन का महीना मौसम में बदलाव का समय होता है। बारिश के कारण हवा में नमी बढ़ जाती है, जिससे पसीना, स्किन की समस्याएं और कई तरह के इंफेक्शन होने का खतरा रहता है। मेहंदी में कुदरती एंटी-बैक्टीरियल गुण होते हैं। बदलते मौसम के कारण होने वाले इंफेक्शन या स्किन से जुड़ी परेशानियां से मेहंदी बचाव करती है। आयुर्वेद के मुताबिक मेहंदी की तासीर काफी ठंडी होती है। इसे हाथों और पैरों में लगाने से शरीर की अंदरूनी गर्मी बाहर निकलती है और दिमाग शांत रहता है। यही नहीं मेहंदी में जलन और सूजन को कम करने वाले एंटी इंफ्लेमेटरी गुण होते हैं, जो पैरों के तलवों को ठंडक और आराम देते है।

सावन का यह श्रृंगार देता है खुशहाली और सकारात्मकता का एहसास

सावल का महीने में महिलाएं हरी चूड़ियां पहनती हैं, मेहंदी लगाती हैं और पारंपरिक श्रृंगार करती हैं। ये छोटी-छोटी चीजें मानसिक स्वास्थ्य पर भी सकारात्मक असर डाल सकती हैं। मनपसंद कपड़े पहनना, मेहंदी लगाना या सजना-संवरना व्यक्ति को खुश महसूस करा सकता है। खुद की देखभाल करने वाली एक्टिविटी से मूड बेहतर होता है और आत्मविश्वास बढ़ता है।

- मेहंदी लगाना और हरी चूड़ियां पहनना कई महिलाओं के लिए खुशी से जुड़ा अनुभव होता है। इससे तनाव कम होता है और मन शांत रहता है।
- सावन के दौरान होने वाले त्योहार, गीत, पूजा और श्रृंगार की परंपराएं लोगों को परिवार और समाज से जोड़ती हैं।
- अपनों के साथ समय बिताना और खुशियां शेयर करना मानसिक स्वास्थ्य के लिए फायदेमंद हो सकता है।
- हरा रंग प्रकृति, शांति और ताजगी से जुड़ा माना जाता है। प्रकृति के करीब रहना और पसंदीदा रंगों का इस्तेमाल करना मन को सकारात्मक महसूस कराता है।
- सावन का श्रृंगार केवल बाहरी सुंदरता बढ़ाने का माध्यम नहीं है, बल्कि यह कई लोगों के लिए खुशी, खुद की देखभाल और इमोशनल जुड़ाव का जरिया भी बन सकता है।

सकारात्मक या नकारात्मक ऊर्जा का संकेत हैं फ्लोरिंग कलर

वास्तुशास्त्र के मुताबिक घर की दीवारों का रंग चुनने से कई वास्तु दोष दूर होते है। ठीक इसी प्रकार फ्लोरिंग कलर भी सोच-समझकर चुने क्योंकि यह सकारात्मक या नकारात्मक ऊर्जा का संकेत हैं।

कहते है कि रंगों का हमारी जिंदगी में गहरा प्रभाव पड़ता है। बात अगर वास्तुशास्त्र की करें तो इसके मुताबिक घर की दीवारों का रंग चुनने से कई वास्तु दोष दूर होते है। ठीक इसी प्रकार फ्लोरिंग कलर भी सोच-समझकर चुने क्योंकि यह सकारात्मक या नकारात्मक ऊर्जा का संके हैं। चलिए आज हम आपको दिशा के मुताबिक फर्श के रंगों के बारे में बताते है जिनसे घर में पॉजिटिव एनर्जी का वास होता है।

पूर्व दिशा

घर की पूर्व दिशा भगवान सूर्य को भी समर्पित मानी जाती है। अगर इस दिशा के वास्तु दोष सही हो तो समाज में मान-सम्मान बना रहता है। अगर आप भी यही चाहते है तो घर की इस दिशा का फर्श डार्क ग्रीन कलर चुनें।

पश्चिम दिशा

वास्तु के मुताबिक, घर की पश्चिम दिशा में लक्ष्मी जी का वास होता है। इसलिए इस दिशा को दोषमुक्त रखने के लिए फर्श का रंग व्हाइट चुनें। ध्यान रखें कि इसपर कोई आकृति या डिजाइन न बनी हो।

उत्तर दिशा

अगर घर में खुशहाली चाहते है तो घर की उत्तर दिशा में डार्क ब्लेक कलर का फर्श लगवाना चाहिए क्योंकि इसे धन-कुबेर का स्थान माना जाता है।

दक्षिण दिशा

दक्षिण दिशा की तरफ कभी भी घर का प्रवेश द्वार नहीं होना चाहिए। वहीं, पति-पत्नी का बेडरूम भी इस दिशा में नहीं होना चाहिए क्योंकि इससे उनकी बीच लड़ाई-झगड़े बने रहते है। अगर चाहते है कि घर की इस दिशा से जुड़े वास्तु दोष दूर हो जाए तो फर्श का रंग हमेशा डार्क रेड चुनें।

उत्तर-पूर्व दिशा

इस जगह पर भगवान शिव का वास माना गया है। बात शिव जी की करें तो उन्हें आसमानी व नीला रंग बेहद पसंद होता है इसलिए इस दिशा का फर्श यानी फ्लोर भी इन्हीं रंगों में सिलेक्ट करें।

दक्षिण-पूर्व

घर की इस दिशा को सृष्टि के रचियता ब्रह्मा की दिशा कहा जाता है इसलिए इस दिशा में बैंगनी यानी पर्पल कलर का फर्श डलवाएं।

दक्षिण-पश्चिम दिशा

इस दिशा में हल्के रंगों का इस्तेमाल करना चाहिए। यहां तक कि फर्श का रंग भी हल्का गुलाबी ही चूज करें। इससे घर में पॉजिटिविटी बनी रहेगी।

उत्तर-पश्चिम दिशा

इस दिशा की दीवारों, पर्दों और यहां तक कि फर्श का रंग भी ग्रे होना चाहिए क्योंकि यह रंग इस दिशा के लिए सबसे शुभ माना जाता है।

स्वतंत्रता दिवस पर अपने लुक में कुछ चेंज करें जींस और टी-शर्ट को स्टाइल कर सकती हैं

15 अगस्त का दिन हर भारतवासी के लिए खास होता है। इस दिन हर कोई झंडा लहराता है। ऐसे में उनके कपड़े पहनने का अंदाज तिरंगे जैसा होता है। कई सारी महिलाएं इस दिन साड़ी पहनती हैं, तो कुछ सूट को स्टाइल करती हैं। लेकिन अगर आपको अपने लुक में कुछ चेंज करना है, तो आप जींस और टी-शर्ट को स्टाइल कर सकती हैं।

जींस और टी-शर्ट पहनने में काफी कंफर्टेबल होती है। साथ ही, पहनने के बाद अच्छी लगती है। चलिए आपको बताते हैं किस तरह की टी-शर्ट को आप जींस के साथ स्वतंत्रता दिवस पर पहन सकती हैं।

वंदे मातरम वाली टी-शर्ट करें स्टाइल

अगर आपको कुछ अलग ट्राई करना है, तो आप इस तरह के तिरंगे वाली वंदे मातरम लिखी हुई टी-शर्ट को स्टाइल कर सकती हैं। यह टी-शर्ट प्लेन होती है। बस आपको इसमें बीच में एक प्रिंट मिलता है, जिसमें आप वंदे मातरम या भारत माता की जय वाला प्रिंट भी ले सकती हैं। यह टी-शर्ट ब्लू जींस के साथ अच्छी लगेगी। इसमें आपका लुक भी अलग दिखेगा। मार्केट में इस तरह की प्रिंटेड टी-शर्ट आपको 100 से 250 रुपये में मिल जाएगी।

स्लोगन वाली टी-शर्ट

अगर आपकी देशभक्ति को और ज्यादा बढ़ाना है, तो आप ऐसे में स्लोगन वाली अलग-अलग डिजाइन की टी-शर्ट खरीद सकती हैं। इसमें आपको हर तरह के स्लोगन लिखे हुए मिलेंगे। इससे आपकी टी-शर्ट अलग नजर आएगी। इसमें आप कलर के साथ प्रिंट को भी चेंज करके ले सकती हैं। मार्केट में इस तरह की टी-शर्ट आपको 200 से 250 रुपये में मिल जाएगी। इसके साथ आपको ज्यादा एक्सेसरीज स्टाइल करने की जरूरत नहीं पड़ेगी।

दिल है हिंदुस्तानी टी-शर्ट

हर किसी का दिल हिंदुस्तानी होता है। इस तरह की टी-शर्ट भी पहनने के बाद अच्छी लगती है। साथ ही, इसमें प्रिंट भी आपको काफी खुला-खुला मिलता है। इसकी वजह से टी-शर्ट डिजाइन अच्छा लगता है। इसमें आप व्हाइट, ऑरेंज या ग्रीन कलर की टी-शर्ट को खरीद सकती हैं। साथ ही, इसे तिरंगे के प्रिंट में डिजाइन को खुद भी कस्टमाइज्ड करा सकती हैं। मार्केट में प्लेन टी-शर्ट आपको 100 से 200 रुपये में मिल जाएगी। इसपर प्रिंट करवाने के लिए आपको 150 रुपये देने पड़ेंगे।

इस बार 15 अगस्त को खास बनाने के लिए पहनें प्रिंटेड डिजाइन वाली टी-शर्ट। इसमें आप कम्फर्टेबल रहेंगी। साथ ही, आपका लुक भी अलग दिखाई देगा।

केवीएसएस का 80 लाख की लागत से बनेगा डबल स्टोरी गोदाम एवं बैंक भवन

रायसिंहनगर(सुखदीप सिंह)। दूरदर्शन रिले केंद्र के पास स्थित क्रय विक्रय सहकारी समिति (केवीएसएस)के खाली पड़े भूखंड पर अब लगभग 80 लाख की लागत से डबल स्टोरी गोदाम निर्माण और केंद्रीय सहकारी बैंक भवन का निर्माण किया जाएगा।

केवीएसएस चेयरमैन राकेश ठोलिया ने बताया कि खाली पड़े भूखंड में लगातार कचरा डालने के कारण वहाँ पर निवास कर रहे मोहल्ले वासियों ने कुछ दिन पूर्व मुझे ज्ञापन दिया था और कचरा निस्तारण कर स्थाई समाधान की माँग की थी उस पर समिति के संचालक मंडल ने स्थानीय निवासियों और किसानो को लाभ देने के लिये बैंक भवन और डबल स्टोरी गोदाम बनाने का निर्णय लिया। चेयरमैन राकेश ठोलिया ने बताया कि केंद्रीय सहकारी बैंक को स्थाई भवन मिलेगा साथ में किसानों और आम जनता को सुविधा मिलेगी जिसमे खाद बीज और अनुदानित

योजनाओं का लाभ किसानो को बाजार में ही मिलेगा।

शिलान्यास समारोह में चेयरमैन राकेश ठोलिया मुख्य व्यवस्थापक योगेश अग्रवाल संचालक मण्डल सदस्य मदन लाल सहारण अनिल बिश्नोई खुशप्रीत सिंह ददीवाल ओम प्रकाश जाखड़ धनपत जादु सुगन सिंह शिव प्रकाश गोदारा नोपा राम मेघवाल सोहन सहारण समिति लेखपाल बाबूलाल बिश्नोई समिति कर्मचारी राजू सिंह अजय भाटी दिनेश हुड्डा विनोद यादव रामसरूप कुमावत कांग्रेस के नगर मंडल अध्यक्ष श्याम लाल मूथा कांग्रेस सेवा दल से मोहन लाल सिरोहिया गोविंद शर्मा विनोद डाबी हंसराज जोशी जयदेव गोयल समिति सहित अन्य लोग उपस्थित थे द्य पंडित गजानंद ने पूजा पाठ कर नीव लगाई और बाद में राकेश ठोलिया और अन्य पदाधिकारियों ने शिलान्यास पटीका का अनावरण किया

लायंस क्लब 'सनराइज' द्वारा आयोजित तिरंगा यात्रा में देशभक्ति के रंग में रंगा शहर

द सांध्यदीप नेटवर्क, श्रीगंगानगर। लायंस क्लब श्रीगंगानगर 'सनराइज' द्वारा 80वें स्वतंत्रता दिवस के उपलक्ष्य में 'तिरंगा यात्रा' का आयोजन किया गया। जन-जन में देशभक्ति तथा राष्ट्रीय एकता की भावना को बढ़ावा देने तथा सदस्यों में क्लब के मूल ध्येय 'हम सेवा करते हैं' की भावना को सुदृढ़ करने के उद्देश्य से सुखाडिया सर्किल स्थित भारत माता चौक से प्रारम्भ इस यात्रा में मुख्य अतिथि रीजन चेयरमैन लायन अरुण लोहिया, अध्यक्ष लायन नितिन मित्तल, सचिव लायन राकेश वधवा, कोषाध्यक्ष लायन राहुल जिंदल, जोन चेयरमैन लायन नितिन खारीवाल, प्रोजेक्ट चेयरमैन लायन सुधांशु बंसल, लायन मनोज गोयल 'मंगल', एस.पी. मित्तल, अंजनी गर्ग, विपिन गोयल, मनोज सरीन, राजकुमार बंसल, विपिन गुप्ता, सौरभ जैन, नरेश सिडाना, संजय बिश्नोई, ऋषभ सराफ, योगेश मंगल, रवि सोनी, सुमित रावल, रमन कंसल, पंकज अग्रवाल, अशोक छाबड़ा, एस.के. जोशी सहित क्लब

पदाधिकारियों, सदस्यों व शहरवासियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। तिरंगा यात्रा गौशाला रोड, बीरबल चौक, रविन्द्र पथ, गोल बाजार, गांधी चौक, दयानंद मार्ग होते हुए भारत माता चौक पहुंचकर सम्पन्न हुई। पूरे यात्रा मार्ग के दौरान सदस्यों ने देशभक्ति के गीतों पर थिरकते हुए एवं राष्ट्रीय ध्वज फहराते हुए गगनभेदी जयघोषों से सारा वातावरण राष्ट्रप्रेम के रंग में सराबोर कर दिया।

वक्ताओं ने राष्ट्रीय ध्वज के प्रति सम्मान व्यक्त करते हुए नागरिकों को देश सेवा में सदैव तत्पर रहने का आह्वान किया। कार्यक्रम के अंत में सचिव लायन राकेश वधवा ने सफल आयोजन के लिए समस्त पदाधिकारियों, सदस्यों एवं शहरवासियों का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि सभी सदस्यों व शहरवासियों का यह असीम उत्साह, सहभागिता तथा देशभक्ति की भावना ही इस तिरंगा यात्रा की सबसे बड़ी सफलता है।

फार्मास्यूटिकल उद्योग में विपणन रणनीतियों एवं अवसरों पर विशेष व्याख्यान

श्रीगंगानगर। सेठ गिरधारी लाल बिहाणी सनातन धर्म तकनीकी शिक्षा महाविद्यालय (फार्मेसी) में 'फार्मास्यूटिकल उद्योग में विपणन रणनीतियाँ एवं अवसर' विषय पर विशेष व्याख्यान का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में फार्मेसी विद्यार्थियों को फार्मास्यूटिकल क्षेत्र में करियर की संभावनाओं, वर्तमान बाजार परिदृश्य और प्रभावी मार्केटिंग रणनीतियों की व्यावहारिक जानकारी दी गई।

कार्यक्रम के प्रारंभ में व्याख्यान समन्वयक डॉ. महेश कटारिया ने अतिथि वक्ता तेजपाल सिंह, सेवानिवृत्त वरिष्ठ क्षेत्रीय प्रबंधक, सनॉफी इंडिया लिमिटेड का महाविद्यालय परिवार की ओर से स्वागत एवं अभिनंदन किया। उन्होंने विद्यार्थियों को अतिथि वक्ता के दीर्घकालीन व्यावसायिक अनुभव एवं विशेषज्ञता से परिचित कराया तथा उनके अनुभवों से सीख लेने के लिए प्रेरित किया।

अतिथि वक्ता तेजपाल सिंह ने डी.फार्मा., बी.फार्मा. एवं एम.फार्मा. के बाद फार्मास्यूटिकल सेक्टर में उपलब्ध रोजगार एवं करियर अवसरों, वर्तमान औद्योगिक परिदृश्य और फार्मा मार्केटिंग के नवीनतम ट्रेंड्स पर विस्तार से प्रकाश डाला।

उन्होंने अपने दीर्घकालीन संगठनात्मक एवं व्यावसायिक अनुभव साझा करते हुए बताया कि एक सफल फार्मा प्रोफेशनल बनने के लिए नेतृत्व क्षमता, बिक्री प्रबंधन, ब्रांड निर्माण, संवाद कौशल तथा प्रभावी ग्राहक रणनीतियों की व्यावहारिक समझ अत्यंत आवश्यक है।

महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. संजीव ठक्कर ने स्टाफ एवं विद्यार्थियों की ओर से अतिथि वक्ता तेजपाल सिंह का आभार व्यक्त किया। उ

न्होंने विद्यार्थियों के साथ अपने बहुमूल्य अनुभव साझा करने के लिए धन्यवाद ज्ञापित करते हुए उन्हें स्मृति चिह्न भेंट कर सम्मानित किया।

दुर्गा स्वामी ने मुख्यमंत्री के दौरे से पहले वामपंथी नेताओं की गिरफ्तारियों की निंदा की

9

द सांध्यदीप नेटवर्क, श्रीगंगानगर। अखिल भारतीय ग्रामीण एवं खेत मजदूर यूनियन की प्रदेशाध्यक्ष श्रीमती दुर्गा स्वामी ने प्रदेश के मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के कल शुक्रवार को श्रीगंगानगर जिले के दौरे से ठीक एक दिन पहले वामपंथी दलों के नेताओं और कार्यकर्ताओं की बड़े पैमाने पर गिरफ्तारियों की कड़े शब्दों में निंदा की है। उन्होंने माकपा नेता श्योपतराम मेघवाल, पालाराम, ताराचंद सोनी और पृथ्वीराज बुडानिया आदि की गिरफ्तारियों का कड़ा विरोध करते हुए कहा कि ग्रामीण एवं खेत मजदूर यूनियन राज्य सरकार की जन-विरोधी नीतियों का लगातार विरोध जारी रखेगी। इसके खिलाफ एक बड़े जन संघर्ष को खड़ा किया जाएगा।

उन्होंने आज एक बयान जारी कर कहा कि प्रदेश की भाजपा सरकार ठीक केंद्र की भाजपा सरकार की तरह लोकतांत्रिक अधिकारों और व्यवस्थाओं का गला घोंटने में लगी हुई है। श्रीमती स्वामी ने आरोप लगाया कि प्रदेश की जनता राज्य सरकार की गलत नीतियों से बेहद त्रस्त है। मजदूर, किसान, व्यापारी, विद्यार्थी और लघु व मध्यम श्रेणी के परिवारों पर राज्य तथा केंद्र सरकारों ने इतने टैक्स थोप दिए हैं कि उनका दैनिक गुजारा करना भी मुश्किल हो गया है। ग्रामीण क्षेत्रों की हालत और भी खराब है। लंबे समय से ग्रामीण लोगों को आर्थिक संबल प्रदान करने वाली महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना (मनरेगा) को बंद करने के बाद केंद्र सरकार द्वारा राम के नाम पर लाई गई नई योजना में ऐसी बाधाएं खड़ी कर दी गई हैं कि ग्रामीण मजदूरों को रोजगार मिलना ही मुश्किल हो गया है। नई योजना के तहत भी ग्रामीण क्षेत्रों में काम बंद पड़े हुए हैं। उन्होंने कहा कि सरकार ने पंचायती राज संस्थाओं के चुनाव न करवाकर इन्हें भी छिन्न-भिन्न कर दिया है। राजनीतिक व्यवस्था के कारण भजनलाल सरकार ने सत्ता में आने के कुछ ही दिनों बाद अनूपगढ़ जिले को निरस्त कर दिया। अनूपगढ़ जिले का विकास रुक गया। यदि यह जिला बरकरार रहता तो ग्रामीण इलाकों का विकास होता और ग्रामीण लोगों को रोजगार मिलता। सरकार की ऐसी गलत नीतियों का विरोध करने वालों की गिरफ्तारियां करने पर कड़ा आक्रोश व्यक्त करते हुए श्रीमती दुर्गा स्वामी ने कहा कि स्थानीय निकाय और पंचायती राज संस्थाओं के होने वाले चुनाव में जनता इस

दाल में पारा मिलाकर सास-ससुर और देवर को मारने की साजिश, बहू को 7 साल की सजा

रायसिंहनगर(सुखदीप सिंह)। पारिवारिक रंजिश में रिश्तों को तार-तार कर देने वाले मामले में अदालत ने आरोपी बहू को दोषी करार देते हुए सात वर्ष के कठोर कारावास की सजा सुनाई है। 20 आरबी निवासी संतोष देवी पर आरोप था कि उसने सास-ससुर और देवर को खिलाने के लिए तैयार की गई दाल में पारा मिला दिया। मामले की सुनवाई के बाद अतिरिक्त मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट प्रथम विपिन बिश्नोई ने संतोष देवी को सात वर्ष के कठोर कारावास और 15 हजार रुपए के अर्थदंड से दंडित किया। वहीं उसकी बेटी को साक्ष्यों के अभाव में संदेह का लाभ देते हुए बरी कर दिया गया।

अपर लोक अभियोजक मोहनलाल बाना ने बताया कि घटना 18 नवंबर 2024 को 20 आरबी गांव में हुई थी। परिवादी मंगलाराम के अनुसार उसकी भाभी संतोष देवी दाल लेकर उनके घर पहुंची थी। परिवार के सदस्य जब दाल खाने बैठे तो उसमें सफेद और चमकीले कण नजर आए। दाल में किसी जहरीले पदार्थ के मिले होने का संदेह हुआ तो परिवार ने तत्काल दाल खाना बंद कर दिया।

दाल खाने के बाद परिवार के सदस्यों की तबीयत बिगड़ने लगी, जिससे घर में हड़कंप मच गया। दाल में पारा मिलाए जाने की आशंका सामने आने के बाद मामले की सूचना पुलिस को दी गई। पुलिस ने मामले की जांच शुरू कर साक्ष्य जुटाए और प्रकरण अदालत में पेश किया।

अदालत में हुई सुनवाई के दौरान अभियोजन पक्ष ने मामले से जुड़े साक्ष्य और गवाह प्रस्तुत किए। सुनवाई के बाद अदालत ने संतोष देवी को दोषी मानते हुए सात वर्ष के कठोर कारावास की सजा सुनाई। साथ ही उस पर 15 हजार रुपए का अर्थदंड भी लगाया।

मामले में आरोपी की बेटी को पर्याप्त साक्ष्य नहीं मिलने पर अदालत ने संदेह का लाभ देते हुए बरी कर दिया।

कांग्रेस में नई संगठनात्मक जिम्मेदारियां सौंपी गईं

श्रीगंगानगर। कांग्रेस संगठन को गांवों और मंडल स्तर तक सक्रिय करने की कवायद के तहत श्रीगंगानगर विधानसभा क्षेत्र में नई संगठनात्मक जिम्मेदारियां सौंपी गई हैं। राजस्थान प्रदेश कांग्रेस कमेटी अध्यक्ष गोविंद सिंह डोटासरा के निर्देशानुसार देहात ब्लॉक कांग्रेस कमेटी के अंतर्गत 3 ई छोटी मंडल और गणेशगढ़ मंडल के अध्यक्षों की नियुक्ति की गई है।

देहात ब्लॉक कांग्रेस कमेटी अध्यक्ष श्याम पुनियानी की ओर से जारी आदेश के अनुसार मदनलाल भाटिया को 3 ई छोटी मंडल कांग्रेस कमेटी तथा बसंत सिंह को गणेशगढ़ मंडल का अध्यक्ष नियुक्त किया गया है। नई जिम्मेदारी मिलने के साथ दोनों नेताओं को अपने-अपने क्षेत्र में संगठनात्मक गतिविधियों को गति देने की जिम्मेदारी सौंपी गई है।

देहात ब्लॉक अध्यक्ष श्याम पुनियानी ने नवनियुक्त मंडल अध्यक्षों को कार्यकर्ताओं के साथ समन्वय बनाकर संगठन को सक्रिय करने के निर्देश दिए हैं। उन्होंने दोनों अध्यक्षों से शीघ्र मंडल कार्यकारिणी का गठन कर घोषणा करने को कहा है, जिससे मंडल स्तर पर संगठन का ढांचा मजबूत हो और पार्टी की गतिविधियां नियमित रूप से संचालित हो सकें।

मंडल कार्यकारिणी में सक्रिय एवं समर्पित कार्यकर्ताओं को जोड़कर संगठन को बूथ स्तर तक मजबूत करने तथा ग्रामीण क्षेत्रों में कांग्रेस की गतिविधियों को प्रभावी बनाने पर जोर दिया जाएगा।

पूर्व जिला कांग्रेस अध्यक्ष एवं श्रीगंगानगर विधानसभा क्षेत्र से कांग्रेस प्रत्याशी रहे अंकुर मगलानी ने मदनलाल भाटिया और बसंत सिंह को मंडल अध्यक्ष बनाए जाने पर बधाई दी।

उन्होंने कहा कि नई जिम्मेदारी के साथ दोनों अध्यक्षों के सामने कार्यकर्ताओं को साथ लेकर संगठन को मजबूत करने का अवसर है।

मगलानी ने विश्वास जताया कि दोनों नेता पार्टी की नीतियों और विचारधारा को जन-जन तक पहुंचाने के साथ क्षेत्र की समस्याओं को संगठन के माध्यम से प्रभावी ढंग से उठाएंगे। उन्होंने कहा कि मजबूत संगठन की नींव बूथ स्तर पर कार्यकर्ताओं की सक्रिय भागीदारी से तैयार होती है।

दोनों मंडलों में नई नियुक्तियों के बाद कांग्रेस कार्यकर्ताओं में उत्साह देखने को मिला। कार्यकर्ताओं ने मदनलाल भाटिया और बसंत सिंह को शुभकामनाएं देते हुए उम्मीद जताई कि उनके नेतृत्व में संगठनात्मक गतिविधियों को नई गति मिलेगी।

नवनियुक्त अध्यक्षों के सामने मंडल स्तर पर कार्यकर्ताओं को सक्रिय करने, नई टीम तैयार करने और ग्रामीण क्षेत्र में कांग्रेस संगठन की पकड़ मजबूत करने की जिम्मेदारी रहेगी।

प्रदेश अध्यक्ष एम.डी. चोपदार के नेतृत्व में हजारों बाइकों के साथ निकली भव्य तिरंगा बाइक रैली

जयपुर (सुरेन्द्र सिंह)। राजस्थान प्रदेश कांग्रेस कमेटी अल्पसंख्यक विभाग के प्रदेश अध्यक्ष एम.डी. चोपदार के नेतृत्व में आज देश की शान तिरंगे के सम्मान एवं राष्ट्रीय एकता का संदेश देने के उद्देश्य से भव्य तिरंगा बाइक रैली का आयोजन किया गया।

रैली पीसीसी कांग्रेस कार्यालय, चांदपोल, जयपुर से दोपहर 1 बजे रवाना हुई। रैली में हजारों बाइकों के साथ अल्पसंख्यक विभाग के हजारों पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता शामिल हुए। हाथों में तिरंगा लेकर कार्यकर्ताओं ने देशभक्ति के नारों के साथ पूरे शहर में राष्ट्रीय एकता और भाईचारे का संदेश दिया।

रैली का जयपुर के विभिन्न क्षेत्रों में व्यापार मंडलों एवं स्थानीय नागरिकों द्वारा फूलों की मालाओं और पुष्पवर्षा के साथ भव्य स्वागत किया गया। जगह-जगह लोगों ने उत्साह के साथ रैली का अभिनंदन किया। रैली के रामगंज चौपड़ पहुंचने पर प्रदेश अध्यक्ष एम.डी. चोपदार का फूलों की माला पहनाकर भव्य स्वागत किया गया। इस दौरान बड़ी संख्या में कांग्रेस कार्यकर्ता, पदाधिकारी, सामाजिक कार्यकर्ता एवं आमजन मौजूद रहे।

एम.डी. चोपदार ने कहा कि तिरंगा देश की आन-बान-शान और हमारी राष्ट्रीय एकता का प्रतीक है। तिरंगा बाइक रैली के माध्यम से समाज के हर वर्ग को एकता, भाईचारे और देशप्रेम का संदेश दिया गया है। रैली के दौरान कार्यकर्ताओं ने तिरंगा हमारा अभिमान, एकता हमारी पहचान के नारों के साथ देशभक्ति का संदेश दिया।

रैली का रामगंज चौपड़ पर राष्ट्रगान के साथ गरिमापूर्ण एवं सफलतापूर्वक समापन हुआ। राष्ट्रगान के दौरान उपस्थित सभी लोगों ने सम्मानपूर्वक खड़े होकर राष्ट्र के प्रति अपनी श्रद्धा एवं सम्मान व्यक्त किया।

राजस्थान प्रदेश कांग्रेस कमेटी अल्पसंख्यक विभाग ने रैली को सफल बनाने में सहयोग देने वाले सभी कार्यकर्ताओं, व्यापार मंडलों, सामाजिक संगठनों एवं आम नागरिकों का आभार व्यक्त किया।

विश्व एथलेटिक्स चैंपियनशिप में चमके एसजीएन खालसा के पूर्व विद्यार्थी बसंत

द सांध्यदीप नेटवर्क, श्रीगंगानगर। श्रीगंगानगर की खेल प्रतिभा एवं एसजीएन खालसा सीनियर सेकेंडरी स्कूल श्रीगंगानगर के पूर्व विद्यार्थी बसंत ने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर शानदार प्रदर्शन कर विद्यालय, श्रीगंगानगर और देश का नाम गौरवान्वित किया है। अंडर-20 विश्व एथलेटिक्स चैंपियनशिप में भारत का प्रतिनिधित्व करने के बाद बसंत के विद्यालय पहुंचने पर विद्यालय परिवार की ओर से उनका गर्मजोशी से स्वागत एवं अभिनंदन किया गया।

विद्यालय पहुंचने पर बसंत ने अपने पुराने गुरुजनों से मुलाकात की और उनका आशीर्वाद प्राप्त किया। इस अवसर पर विद्यालय के विद्यार्थियों एवं शिक्षकों में विशेष उत्साह देखने को मिला। बसंत ने विद्यार्थियों के साथ अपनी खेल यात्रा, संघर्ष, प्रशिक्षण तथा अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिता के अनुभव भी साझा किए।

विद्यालय के प्राचार्य बलदेव सिंह ने बसंत को उनकी उपलब्धि पर बधाई देते हुए कहा कि एक पूर्व विद्यार्थी का अंतरराष्ट्रीय स्तर पर देश का प्रतिनिधित्व करना पूरे विद्यालय परिवार के लिए गर्व का विषय है। बसंत की सफलता विद्यालय के वर्तमान विद्यार्थियों के लिए प्रेरणादायक है। उन्होंने कहा कि निरंतर अभ्यास, अनुशासन, दृढ़ संकल्प और लक्ष्य के प्रति समर्पण से किसी भी मंजिल को प्राप्त किया जा सकता है।

प्रबंध समिति के अध्यक्ष गुरदित्ता सिंह एवं सचिव अवतार सिंह ने भी बसंत को उनकी उपलब्धि पर शुभकामनाएं दीं। उन्होंने कहा कि एसजीएन खालसा संस्थान हमेशा विद्यार्थियों को शिक्षा के साथ-साथ खेल एवं अन्य क्षेत्रों में अपनी प्रतिभा विकसित करने के लिए प्रोत्साहित करता रहा है। बसंत की उपलब्धि संस्थान की इसी परंपरा को आगे बढ़ाने वाली है।

इस अवसर पर विद्यालय प्रबंधन के समस्त पदाधिकारियों एवं प्रबंध समिति के सदस्यों ने बसंत का अभिनंदन करते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की। विद्यालय के शिक्षकों एवं स्टाफ सदस्यों ने भी बसंत को बधाई दी और उनकी सफलता पर प्रसन्नता व्यक्त की।

बसंत की इस उपलब्धि से एसजीएन खालसा सीनियर सेकेंडरी स्कूल परिवार में खुशी और गर्व का माहौल है। विद्यालय परिवार ने उन्हें भविष्य में देश के लिए और भी बड़ी उपलब्धियां अर्जित करने के लिए शुभकामनाएं दीं।

10 दिवसीय प्रशिक्षण के लिए 980 नागरिक सुरक्षा स्वयंसेवकों की सूची जारी

हनुमानगढ। नागरिक सुरक्षा स्वयंसेवक मनोनयन/चयन-2025 के अंतर्गत शारीरिक दक्षता परीक्षा (800 मीटर दौड़) में सफल 980 आवेदनकर्ताओं का 10 दिवसीय बुनियादी एवं सेवा प्रशिक्षण 17 अगस्त से 26 अगस्त, 2026 तक एनपीएस, हनुमानगढ़ में आयोजित किया जाएगा। अतिरिक्त जिला कलक्टर एवं उप नियंत्रक नागरिक सुरक्षा उम्मेदी लाल मीणा द्वारा इस संबंध में आवश्यक निर्देश जारी किए गए हैं। जारी निर्देशों के अनुसार प्रशिक्षणार्थियों को दो बैचों में प्रशिक्षण दिया जाएगा। सूची के क्रम संख्या 1 से 490 तक के आवेदनकर्ताओं का प्रशिक्षण प्रात: 9 बजे से दोपहर 1 बजे तक, जबकि क्रम संख्या 491 से 980 तक के आवेदनकर्ताओं का प्रशिक्षण दोपहर 2 बजे से सायं 6 बजे तक आयोजित होगा। निर्देशों के अनुसार सभी प्रशिक्षणार्थियों के लिए 10 दिवसीय प्रशिक्षण में पूर्ण उपस्थिति अनिवार्य होगी। यदि कोई प्रशिक्षणार्थी प्रशिक्षण के दौरान एक भी दिन अनुपस्थित रहता है तो नागरिक सुरक्षा स्वयंसेवक मनोनयन/चयन-2025 के लिए उसका आवेदन अमान्य माना जाएगा।

इसके अतिरिक्त सभी प्रशिक्षणार्थियों को 26 अगस्त, 2026 तक अद्यतन पुलिस सत्यापन एवं स्वास्थ्य प्रमाण-पत्र कार्यालय में जमा करवाना अनिवार्य होगा। निर्धारित तिथि तक आवश्यक दस्तावेज जमा नहीं कराने अथवा पुलिस सत्यापन एवं स्वास्थ्य प्रमाण-पत्र प्रतिकूल पाए जाने की स्थिति में संबंधित आवेदन भी निरस्त माना जाएगा।

तिरंगा रैली से देश राग में रंगा ब्यावर

ब्यावर (दिलीप सिंह)। केन्द्रीय संस्कृति एवं पर्यटन मंत्रालय द्वारा 9अगस्त से17 अगस्त तक मनाये जा रहे राष्ट्र व्यापी उत्सव हर घर तिरंगा ध्वज अभियान-2026 के तहत गुरूवार अपरान्ह विधायक शंकर सिंह रावत के नेतृत्व में गिब्सन हॉस्टल से सिक्ख गुरूद्वारा तक विशाल तिरंगा दुपहिया वाहन रैली निकाली गई। रैली का पुष्प वर्षा से शहर वासियों ने स्वागत किया। रैली से माहौल देश भक्ति के रंग में रंगा नजर आया। हाथों में तिरंगा ध्वज थामे भाजपा कार्यकताओं ने वंदे मातरम,सारे जहां से अच्छा हिन्दोस्तां हमारा व भारत माता के जयकारे लगाये। रैली में नगर परिषद के निवर्तमान सभापति नरेश कन्नौजिया, जवाजा पंस प्रधान गणपत सिंह रावत,पूर्व सभापति बबीता चौहान,जयकिशन बल्दुआ,रैली संयोजक गोपाल सिंह रावत,वीरेंद्र सिंह रावत व पूर्व पार्षद शामिल थे। इसी तरह भाजपा जिलाध्यक्ष आशीष सांड़ के नेतृत्व में अजमेरी गेट से शहर के मुख्य मार्ग पर तिरंगा रैली निकाली गई। पूर्व विधायक देवी शंकर भूतड़ा के नेतृत्व में अजमेरी गेट से चांग गेट तक निकली गई तिरंगा रैली में देशभक्ति का ज्वार देखा गया।